व्यावहारिक शिष्यत्व

व्यावहारिक शिष्यत्व: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम परिचय।

II. शिष्यत्व का एक प्रतिमान।

कक्षा #२:

III. शिष्यत्व के पहलू।

IV. नए विश्वासियों की प्राथमिक आवश्यकताएँ।

V. एक नए विश्वासी में विकसित करने वाली तीन प्रमुख आदतें।

VI. एक पूर्ण शिष्यत्व कार्यक्रम: (परिचय)

कक्षा #३:

VI. एक पूर्ण शिष्यत्व कार्यक्रम (१-१२)।

कक्षा #४:

VI. एक पूर्ण शिष्यत्व कार्यक्रम (१३-२३)।

कक्षा #५:

VI. एक पूर्ण शिष्यत्व कार्यक्रम (२४-३०)।
परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

व्यावहारिक शिष्यत्व: परीक्षा

संभावित २० अंक प्रश्न

१) कक्षा में प्रयोग किए गए आरेख के कुछ भागों का उपयोग करके, शिष्यत्व का एक प्रतिमान विकसित करें (पृष्ठ ११३)।

२) नए विश्वासियों की चार प्राथमिक आवश्यकताओं की सूची बनाएँ और चर्चा करें (पृष्ठ ११६-११९)।

३) एक नए विश्वासी में विकसित होने करनेवाली तीन प्रमुख आदतों के विषय में लिखिए (पृष्ठ १२०-१२२)।

संभावित १० अंक प्रश्न

१) लूका १६:१० का प्रयोग करते हुए, विश्वासयोग्यता के सिद्धांत का सारांश निकालें (पृष्ठ ११२)।

२) दो पद्यों का सन्दर्भ दें जो दिखाते हैं कि शिष्य एक दूसरे से प्रेम करते हैं (पृष्ठ ११५)।

३) एक पद्य का उपयोग करते हुए यह दिखाएँ कि कैसे एक शिष्य मसीह का अनुसरण करने हेतु सब कुछ त्यागने को तैयार होता है (पृष्ठ ११६)।

४) दो पद्यों का सन्दर्भ दें जो एक नए विश्वासी को उद्धार के आश्वासन को समझने में सहायता करते हैं (पृष्ठ ११६)।

५) तीन गतिविधियों की सूची बनाएँ जो आप एक नए विश्वासी को प्रार्थना की ओर ले जाने में सहायता करने के लिए उनके साथ कर सकते हैं (पृष्ठ १३१, १३२)।

६) तीन गतिविधियों की सूची बनाएँ जो आप एक नए विश्वासी को गवाही के क्षेत्र में उनकी सहायता करने के लिए उनके साथ कर सकते हैं (पृष्ठ १४१)।

व्यावहारिक शिष्यत्व

टिप्पणियाँ -

I. पाठ्यक्रम परिचय।

लेखक की टिप्पणी:

एक मसीही शिष्य वह है जो यीशु मसीह का अनुयायी है। एक शिष्य वह है जो स्वेच्छा से अपने जीवन को यीशु मसीह के चरित्र और संदेश को प्रतिरूपित करने के लिए अनुशासित करता है। हम मसीहियों के रूप में इसे करने में सक्षम हैं क्योंकि हमारे भीतर मसीह जीवित हैं, जो हमें उनके करीब आने और उनके जैसे बनने में सक्षम करता है।

हालाँकि, अन्य लोगों को शिष्य बनाने में सहायता करने हेतु, हमें पहले स्वयं को शिष्य बनाना चाहिए। हम जो कहते और सिखाते हैं, वह हमारे जीवन में प्रदर्शित होना चाहिए। अन्यथा, हमारे शब्द पाखंडी और अर्थहीन होंगे, और दूसरों पर हमारा बहुत कम प्रभाव पड़ेगा। यदि हमारा जीवन यीशु की ओर संकेत नहीं करता है और उनके संदेश और मूल्यों को प्रतिबिंबित नहीं करता है, तो हम किसी अन्य से कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि वह वो सुनेगा कि हम क्या कहते हैं?

चेला बनाने का आरम्भ स्वयं के प्रति ईमानदार होने से होता है। हमें यीशु के लिए जीना चाहिए और उन बातों का उदाहरण बनना चाहिए जो हम दूसरों को सिखाते हैं।

क. शिष्यत्व की कुंजी।

१. किसी को चेला बनाने की प्रक्रिया स्वाभाविक है। यह एक व्यक्ति को यीशु मसीह के प्रति बढ़ी हुई प्रतिबद्धता के जीवन की ओर ले जाने की प्रक्रिया है, जो उस व्यक्ति को यह दिखाती है कि स्वयं को कैसे मारना है।

   क. यह परमेश्वर के वचन के अध्ययन और एक साथ जीवन का अनुभव करने के द्वारा किया जाता है।

   ख. प्रत्येक दिन अपने आप को मारने और मसीह के लिए जीने के कई स्पष्ट और व्यावहारिक अवसर प्रदान करता है।

टिप्पणियाँ -

२. शिष्यत्व की कुंजी एक व्यक्ति में यह दृष्टिकोण बनाना है कि यीशु **योग्य** हैं। यीशु का अनुसरण करना **मूल्यवान** है।

क. यीशु का अनुसरण करने के लिए व्यक्ति को कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए। एक शिष्य को मसीह के लिए मरने के लिए तैयार रहना चाहिए।

ख. यह किसी को इस रवैये को सिखाने और प्रतिमान बनाने के लिए अनुशासित करने की प्रक्रिया की कुंजी है।

इतिहास से एक उदाहरण:

निम्नलिखित उन लोगों के जीवन में प्रतिबद्धता के बढ़ावे का एक ऐतिहासिक उदाहरण है जो किसी अन्य के अनुयायी हैं।

कुख्यात स्पेनिश खोजकर्ता, कॉर्टेज़, "विजेताओं" को शिष्य बनाना जानते थे। उन्होंने अपने सैनिकों के उपलब्ध विकल्पों को कम करके उनके जीवन में प्रतिबद्धता को बढ़ाया।

जब कॉर्टेज़ १५१९ में मेक्सिको की भूमि को जीतने के लिए वेरा क्रूज़ के समुद्र तटों पर पहुंचे, तो उन्होंने उन ११ जहाजों में से प्रत्येक को जला दिया, जिन पर वह और उसके लोग आए थे। सैनिक समुद्र तट पर खड़े होकर देख रहे थे कि उनका एकमात्र वापसी का साधन मेक्सिको की खाड़ी में डूब गया है। सैनिकों के पास जाने के लिए केवल एक ही दिशा थी। वे सीधे मेक्सिको के भीतरी भाग की ओर बढ़ने लगे।

कॉर्टेज़ ने अपने विकल्पों को कम करके अपने आदमियों में प्रतिबद्धता पैदा की।

इसी प्रकार शिष्यत्व की प्रक्रिया में व्यक्ति के विकल्पों को कम करके मसीह के प्रति अधिक प्रतिबद्धता का निर्माण करना चाहिए। अर्थात्, शिष्यत्व की प्रक्रिया में दूसरों को यह सिखाना चाहिए कि कैसे स्वयं के लिए मरना है और मसीह को एकमात्र विकल्प के रूप में रखना है।

शिष्यत्व की प्रक्रिया को व्यक्ति के जीवन में पीछे हटने वाले जहाजों को जला देना चाहिए। इसे पीछे हटने के सभी मार्गों को नष्ट करना चाहिए और दूसरों को सीधे यीशु की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

विश्वासयोग्यता का सिद्धांत:

I शमूएल अध्याय १७ में दाऊद के जीवन के माध्यम से, हम एक उदाहरण देख सकते हैं कि कैसे छोटी चीजों में विश्वासयोग्य होना बड़ी चीजों में विश्वास की ओर ले जाता है।

१ शमू. १५ में, भविष्यवक्ता शमूएल ने इस्राएल पर राजा बनने के लिए दाऊद का अभिषेक किया। हालाँकि, दाऊद ने वास्तव में राजा बनने से पहले अगले १२-१४ वर्ष तैयारी में बिताए। अभिषिक्त होने के बाद, उन्होंने पहले कभी-कभी राजा शाऊल के लिए एक संगीतकार के रूप में सेवा की, जबकि वह अपने पिता की भेड़ों के चरवाहा बने रहे।

१ शमू. १७:१५ में, हम पाते हैं कि दाऊद भेड़ के मैदानों से राजा शाऊल के लिए संगीत बजाने के लिए आते-जाते थे। वह एक चरवाहे के रूप में विश्वासयोग्य थे, भले ही उन्हें राजा के लिए संगीत बजाने का अवसर मिला था और वास्तव में भविष्य का राजा बनने के लिए उनका अभिषेक किया गया था। फिर भी, संगीतकार के रूप में सेवा करते हुए दाऊद ने देखा कि कैसे राजा अपने राज्य का प्रशासन चलाते हैं।

१ शमू. १७:२० में, दाऊद भेड़ों को दूसरे चरवाहे के पास छोड़ गए जब वह अपने भाइयों को भोजन देने गए, जो युद्ध के लिए गए थे। वह भेड़ों के प्रति अपनी जिम्मेदारी के प्रति विश्वासयोग्य रहे।

I शमू. १७:२२ में, दाऊद ने एक रक्षक के पास भोजन की आपूर्ति छोड़ दी, जब वह गोलियत का सामना करने की संभावना की जाँच करने गए। विकट परिस्थिति में भी, दाऊद अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति विश्वासयोग्य थे।

१ शमू. १७:३४-३७ में, दाऊद ने स्वेच्छा से युद्ध में गोलियत का सामना करना चुना। उन्होंने इस बात पर विचार किया कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें उनके पिता की भेड़ों की देखभाल करते समय शेरों और भालुओं को मारना सिखाया था। वह जानते थे कि परमेश्वर ने उन्हें गोलियत जैसे बड़े प्रतिद्वंद्वी का सामना करने के लिए तैयार किया है। वास्तव में, उन्होंने केवल गोफन के एक वार से गोलियत को सरलता से मार डाला।

पूरे १ शमू. १७ में, दाऊद ने उन्हें सौंपे गए छोटे-छोटे कार्यों में विश्वासयोग्यता का प्रदर्शन किया। इसने उन्हें देश के सबसे बड़े शत्रु को पराजित करने और अंततः पूरे इस्राएल पर राजा बनने की अनुमति दी।

टिप्पणियाँ -

टिप्पणियाँ -

ख. विश्वासयोग्यता का सिद्धांत।

१. लूका १६:१० पढ़ें, "जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है।"

क. यहाँ हमारे पास एक बहुत ही महत्वपूर्ण बाइबल सिद्धांत है। जो छोटी सी बात में विश्वासयोग्य होता है वह बड़ी बात में भी विश्वासयोग्य होता है।

ख. शिष्यत्व के संबंध में हम कह सकते हैं: "यदि आप एक व्यक्ति को सही ढंग से शिष्य बनाना सीख जाते हैं, तो आप कितने ही लोगों को सही ढंग से शिष्य बनाने में सक्षम होंगे।"

२. दुर्भाग्य से, कुछ लोग ३०० लोगों को शिष्य बनाने का प्रयास करते हैं, इससे पहले कि उन्होंने एक व्यक्ति को भी प्रभावी ढंग से शिष्य बनाना सीखा हो।

ग. इस पाठ्यक्रम की विषय-सूची।

१. हम शिष्यत्व का एक सामान्य प्रतिमान को प्रस्तुत करेंगे।

२. हम नए विश्वासियों की प्रारंभिक आवश्यकताओं पर विचार करेंगे।

३. हम एक नए विश्वासी में विकसित करने वाली सबसे महत्वपूर्ण आदतों पर विचार करेंगे।

४. पाठ्यक्रम का अंतिम भाग बहुत ही व्यावहारिक होगा। एक नए विश्वासी को शिष्य बनाने में शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण बिंदु क्या हैं? लेरॉय एम्स द्वारा द लॉस्ट आर्ट ऑफ़ डिसिप्लिन मेकिंग से ली गई सामग्री की सहायता से (अनुमति द्वारा प्रयुक्त), हम एक ३० बिंदु कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे जिसका उपयोग आप दूसरों को शिष्य बनाने के लिए कर सकते हैं।[१]

II. शिष्यत्व का एक प्रतिमान।[२]

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख का अध्ययन और चर्चा करें, जो इस बात का विवरण प्रस्तुत करता है कि कैसे एक व्यक्ति एक मसीही के रूप में जड़ पकड़ता है, स्थापित और निर्मित होता है, जिससे मसीही सेवा और श्रम का बहाव होता है।

व्यावहारिक शिष्यत्व

चेले बनाओ (मत्ती २८:१९-२०)
मसीही का जीवन

मजदूरों को प्रशिक्षित करें (मत्ती ९:३५-३८)
मसीही की सेवकाई

आरम्भिक स्थापना | स्थापना | मजदूरों को सुसज्जित करना

खोज: "आओ और देखो" यूह. १:३५ प्रेरितों के काम २:४२ १ थिस्स. २:७ ध्यान केंद्रित - यीशु मसीह का व्यक्ति।	**विकास:** "मेरे पीछे आओ, और मैं तुम्हें मनुष्यों को पकड़ने वाला बनाऊँगा" मर. १:१६ लूका ५:१ ध्यान केंद्रित - मसीह केंद्रित जीवन।	**तैनाती:** "कि वे उसके साथ हो सकते हैं, कि वह उन्हें प्रचार करने हेतु बाहर भेज सकते हैं" मर. ३:१३ लूका ६: १२ ध्यान केंद्रित - एक फलदायी जीवन।
"तुमने मुझसे क्या सुना है . . . गुणन करने वाले शिष्य	विश्वासयोग्य पुरुषों को सौंपें	. . . जो दूसरों को शिक्षा देने में सक्षम होंगे. . .।"
उत्पाद: कुलु. १:२८ प्रक्रिया: कुलु. २:६,७ **जड़ पकड़े** उद्देश्य: इफि. २:११-१३ प्रक्रिया: २ तीमु: २:२	**स्थापित/ बनाए गए**	**उमड़ते हुए** * सेवा के कार्य के लिए मसीह में प्रत्येक परिपक्व व्यक्ति
विषय-सूची: यीशु मसीह कौन हैं। हम मसीह में कौन हैं। हम उनकी देह में कौन हैं। आश्वासन: १) उद्धार (१ यूह. ५:११,१२) २) उत्तर प्राप्त प्रार्थना (यूह. १६:२४) ३) विजय (१ कुरिं. १०:१३) ४) क्षमा (१ यूह. १:९) ५) मार्गदर्शन (नीति. ३:५,६) स्थापित करना आरम्भ करें (प्रेरितों. २:४२) १) वचन: व्यक्तिगत/सामूहिक २) संगती: बाँटना ३) आराधना: व्यक्तिगत/सामूहिक ४) प्रार्थना: शांत समय	विषय-सूची: बाइबल शिक्षा और धर्मविज्ञान के आधार व्यक्तिगत आदतें: १) वचन: अध्ययन/याद रखना २) प्रार्थना: शांत समय ३) संगती: भागीदारी ४) गवाह: गवाही देना व्यक्तिगत परिपक्वता: १) आज्ञाकारिता २) श्रद्धा ३) चरित्र ४) परमेश्वर की इच्छा ५) दूसरों के लिए प्रेम ६) दूसरों के साथ काम करना	विषय-सूची: सेवकाई के लिए वरदान सेवकाई के लक्ष्य सेवकाई के लिए दर्शन सेवकाई के लिए गुण सेवकाई के लिए बुलाहट सेवकाई के लिए सक्षम करना सेवकाई में योगदान उपाधि प्राप्ति

एक मसीही के रूप में कार्य करना | **एक मसीही के रूप में योगदान**

टिप्पणियाँ -

III. शिष्यत्व के पहलू।

क. वास्तविक मसीहियत मसीह के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता है।

१. मसीह को आपके जीवन के सभी पहलुओं में प्रथम स्थान पर रखा गया है।

२. आपको बिना शर्त मसीह के प्रति समर्पण करना चाहिए।

३. आप अपना पूरा जीवन मसीह को देने के लिए तैयार हैं।

चर्चा विषय

यदि मसीह को आपके जीवन के सभी पहलुओं में प्रथम स्थान पर रखा गया है, तो यह आपकी नौकरी, परिवार, वित्त, खाली समय और मूल्यों के क्षेत्रों में आपके जीवन को कैसे प्रभावित करता है?

ख. एक शिष्य के पास मसीह के लिए एक सर्वोच्च प्रेम होता है।

१. लूका १४:२६ के तात्पर्यों का अध्ययन करें और उनकी चर्चा करें।

२. यीशु के प्रति आपके प्रेम की तुलना में, दूसरों के लिए आपका प्रेम घृणा प्रतीत होता है।

क. अर्थात्, आपके जीवन में किसी को भी यीशु से पहले नहीं रखा गया है। कोई पास भी नहीं!

ख. इसमें वह स्थिति सम्मिलित है जिसमें आप स्वयं को डालते हैं। इसमें स्वयं के लिए आपका प्रेम सम्मिलित है।

चर्चा विषय

एक मसीही विश्वासी को आत्म-पूर्ति को आदर्श बनाने या यहाँ तक कि अपने पति या पत्नी या बच्चों को आदर्श बनाने के प्रति क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए?

टिप्पणियाँ -

ग. एक शिष्य स्वयं का इंकार करता है, क्रूस उठाता और मसीह के पीछे चलने का चुनाव करता है (मत्ती १६:२४, लूका ९:२३)।

१. स्वयं का इंकार।

क. एक शिष्य मसीह और दूसरों के लिए अपने अधिकारों का त्याग करके स्वयं से इंकार करता है।

ख. वह अपने अधिकारों का दावा करने और उनसे चिपके रहने का प्रयास नहीं करता है (फिलि. २:७ में यीशु के उदाहरण पर विचार करें)।

२. क्रूस उठाता है।

क. क्रूस शर्म, सताव और दुर्व्यवहार का प्रतीक है।

ख. क्रूस का जीवन ऐसा जीवन होगा जो संसार की रीति के विरुद्ध है।

३. मसीह के पीछे चल पड़ता है।

क. हमें चलना और जीना चाहिए जैसे मसीह चले और जिए।

ख. हमें अवश्य फल लाना चाहिए (गला. ५:२२, २३; यूह. १५:८)।

चर्चा विषय

स्वयं से इंकार करना, क्रूस उठाना और यीशु के पीछे चलना कठिन और चुनौतीपूर्ण आवश्यकताएँ हैं। ऐसा जीवन जीने के क्या लाभ हैं?

घ. शिष्य एक दूसरे से प्रेम करते हैं।

१. हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया (देखें यूह. १३:३४)।

२. एक दूसरे से प्रेम करने के द्वारा, संसार जानता है कि हम मसीह के चेले हैं (देखें यूह. १३:३५)।

चर्चा विषय

१ कुरिं. १३:४-७ में पाए गए प्रेम के कई पहलुओं को पढ़ें और उन पर चर्चा करें। मसीहियों और गैर-मसीहियों के जीवन में क्या होता है, जो गवाह हैं, जब हम वास्तव में प्रेम के इन पहलुओं का उपयोग करते हैं?

टिप्पणियाँ -

ङ. चेले परमेश्वर के वचन में बने रहते हैं।

१. एक शिष्य को मसीह की शिक्षाओं को पकड़े रहना चाहिए (देखें यूह. ८:३१, ३२)।

२. शिष्य स्थिर होता है।

३. वह दृढ़ और बने रह सकता है (देखें लूका ९:६२)।

चर्चा विषय

यीशु का अनुसरण करने, परन्तु मसीह ने जो सिखाया उसका अभ्यास न करना जारी रखने के आरंभिक परिणाम क्या हैं (देखें मत्ती ७:२१-२३; २४-२७; लूका ६:४६-४९ और १ यूह. २:३,४)?

च. एक शिष्य मसीह का अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्याग देगा।

१. शिष्य उन सभी चीजों को त्याग देता है जो परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक नहीं हैं (देखें लूका १४:३३)।

२. संक्षेप में, एक शिष्य कड़ी मेहनत करता है, अपने अंदर बहुत कम लेता है और बहुत कुछ देता है।

चर्चा विषय

मसीह का अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्यागने से संबंधित निम्नलिखित पद्यों को पढ़ें और चर्चा करें: मत्ती ६:१९, २०; लूका १२:३३; लूका १८:२२; प्रेरितों के काम २:४५; मत्ती ६:३३; और १ यूह. ३:१७।

IV. नए विश्वासियों की प्राथमिक आवश्यकताएँ।

क. आश्वासन।

१. यह आश्वासन कि वे मसीह में एक नई सृष्टि हैं (देखें २ कुरिं. ५:१७)।

२. इस आश्वासन में यीशु मसीह के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन सम्मिलित होना चाहिए (१ यूह. ५:११, १२)।

टिप्पणियाँ -

३. इसमें पाप के प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन सम्मिलित होना चाहिए (१ यूह. १:९)।

अपना उदाहरण लिखें:

ख. प्रेम और स्वीकृति।

१. एक नए विश्वासी को परमेश्वर के प्रेम और दूसरों के प्रेम को जानने की आवश्यकता है (देखें I थिस्स. २:८-११)।

२. मसीह में कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है (रोमि.८:१)।

ग. सुरक्षा।

१. यह सुरक्षा प्रार्थना और निर्देश के माध्यम से दी जा सकती है। (देखें २ कुरि. १३:७ और १ तीमु. १:३, ४)।

२. नए विश्वासियों को विशेष रूप से निम्न के विरुद्ध संरक्षित किया जाना चाहिए:

क. झूठे पंथ - मसीह की अलौकिकता और क्रूस के माध्यम से क्षमा पर जोर देना सुनिश्चित करें।

ख. बुरे मित्र और प्रभाव - उद्धार के तुरंत बाद नए विश्वासी को स्वयं को बुरे प्रभावों से अलग करने के लिए प्रोत्साहित करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

ग. शैतान।

१) नए विश्वासी को शैतान के आक्रमणों की वास्तविकता के विषय में चेतावनी दें।

२) शैतान के सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले हथियारों, आरोप और निराशा के संबंध में उन्हें चेतावनी देना और निर्देश देना।

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

घ. संगती।

१. नए विश्वासी को एक स्वस्थ संगति से परिचित किया जाना चाहिए।

२. उन्हें तुरंत अन्य विश्वासियों से जुड़ना आरम्भ कर देना चाहिए जो उनका गर्मजोशी से स्वागत करेंगे।

अपना उदाहरण लिखें:

ङ. खाना।

१. प्रत्येक नए विश्वासी को परमेश्वर के वचन से खाने की आवश्यतकता है। (देखें १ पत. २:२, ३)।

२. साथ ही, नए विश्वासी को आरंभ करने में सहायता करने हेतु एक अधिक परिपक्व विश्वासी से वचन सिखाए जाने की आवश्यकता है।

३. उन्हें सिखाएँ कि स्वयं को कैसे सिखाया जाए। अर्थात, उन्हें बाइबल का अध्ययन करना सिखाएँ।

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

च. प्रशिक्षण।

१. एक नए विश्वासी को यह जानना आवश्यक है कि प्रभु के साथ शांत समय कैसे व्यतीत किया जाए।

२. एक नए विश्वासी को यह जानना आवश्यक है कि प्रार्थना कैसे की जाती है।

३. एक नए विश्वासी को यह जानने की आवश्यकता है कि वचन को कैसे याद करना है।

४. एक नए विश्वासी को यह जानना आवश्यक है कि बाइबल का अध्ययन कैसे किया जाता है।

५. एक नए विश्वासी को यह जानना आवश्यक है कि प्रभु की स्तुति और आराधना कैसे करें।

६. एक नए विश्वासी को यह जानने की आवश्यकता है कि दूसरों को कैसे गवाही दी जाए।

७. एक नए विश्वासी को यह जानने की आवश्यकता है कि अन्य मसीहियों के साथ कैसे संगति की जाए।

नोट: एक नए विश्वासी को प्रशिक्षण देते समय, आरम्भ में "क्यों" के बजाय "कैसे" पर ध्यान केंद्रित करें (१ थिस्स। ४:१; फिलि. ४:९)।

टिप्पणियाँ -

V. एक नए विश्वासी में विकसित करने वाली तीन मुख्य आदतें।

क. मसीह के साथ भोज।

१. नए विश्वासी के लिए प्रार्थना करें कि वह प्रभु के साथ अपने संबंध को विकसित करे (देखें कुलु. १:९, १०; और भज. ११९:९७, १२९, १३१, १४०, १४८, १६२)।

२. यीशु के साथ संबंध बनाने के अपने स्वयं के उद्देश्यों का वर्णन करें। प्रभु के साथ अपने संबंध के महत्व और लाभों का वर्णन करें।

क. अपने लाभों का वर्णन करते हुए विशिष्ट रहें। नए विश्वासी को प्रार्थना के विशिष्ट उत्तरों के वाय में बताएँ जो आपको मिले हैं।

ख. उनके साथ कुछ विशिष्ट प्रकाशन साझा करें जो आपने हाल ही में अपने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के समय में पाए हैं।

३. उन्हें प्रभु के साथ संबंध वाले अन्य मसीहियों से मिलवाने का प्रयास करें। उन्हें अन्य मसीहियों के साथ बाइबल अध्ययन और प्रार्थना में समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करें।

ख. अन्य विश्वासियों के प्रति जवाबदेह होना।

१. एक नए विश्वासी (सभी मसीहियों के समान) को अन्य विश्वासियों के साथ मजबूत संबंधों की आवश्यकता होती है। संबंधों के इन जोड़ों के भीतर, कुछ ऐसे होने चाहिए जो विचारों, कार्यों और समय की जवाबदेही बनाए रखें।

२. जवाबदेही एक ऐसा वातावरण बनाती है जहाँ मसीही एक दूसरे को पाप का सामना करने या पाप को अपने जीवन में पैर जमाने से रोकने हेतु चुनौती दे सकते हैं (याकूब ५:१६; इफि. ५:२१)।

३. जवाबदेही विश्वासियों को उनकी जीवन शैली में मसीह के समान अधिक बनने और अधिक आज्ञाकारी होने हेतु मजबूत और तेज करने में सहायता करती है (नीति. २७:१७)।

४. नए विश्वासियों को अधिक परिपक्व मसीहियों की ओर जवाबदेही के स्रोत के रूप में देखना चाहिए। वे नए विश्वासी में अनुशासन पैदा करने में सहायता करते हुए बुद्धि और प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं (१ पत. ५:५; इब्रा. १३:१७)।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदाहरण:

नए नियम में जवाबदेही और शिष्यता का एक अच्छा उदाहरण पौलुस के मसीही जीवन में देखा जा सकता है जब वह बरनबस से परिचित हुआ (प्रेरितों के काम ९ और ११)।

दमिश्क के मार्ग में जब पौलुस का व्यक्तिगत रूप से मसीह से सामना हुआ (प्रेरितों के काम ९), तो पौलुस का जीवन परिवर्तन हो गया था। उनके पास अरब के रेगिस्तान में प्रशिक्षण की एक व्यक्तिगत अवधि भी थी।

फिर भी, जब पौलुस पहली बार चेलों से मिलने यरूशलेम आए, तो उन्होंने उन पर भरोसा नहीं किया और उनकी गंभीरता पर संदेह किया। तथापि, बरनबास पौलुस को प्रेरितों के पास लाए और उनके लिए उनके साथ रहना संभव बनाया (प्रेरितों के काम ९:२६-३१)।

बाद में बरनबास ने जाकर पौलुस को तरसुस में पाया (प्रेरितों ११:२५) और उन्हें अन्ताकिया ले आया। उन्होंने अपने के साथ अपने साथी के रूप में उन्हें एक वर्ष तक शिक्षा देने का मौका दिया।

वे एक सेवकाई दल बन गए, जो सुसमाचार को अन्यजाति संसार में ले गए। जैसे-जैसे समय बीतता गया, पौलुस अधिक प्रसिद्ध और प्रमुख प्रेरित बन गए।

फिर भी, प्रेरितों में सबसे शक्तिशाली पौलुस को एक जवाबदेही संरचना और बरनबास के साथ संबंध की आवश्यकता थी ताकि उन्हें बढ़ने, विश्वसनीयता प्राप्त करने और सेवा-नियुक्त कार्य क्षेत्र में भेजे जाने में सहायता मिल सके। पौलुस ने अन्ताकिया की कलीसिया के साथ भी अपने संबंध को बनाए रखा, जब उन्होंने सेवा-नियुक्त कार्य हेतु यात्रा की, तब भी उन्हें जवाबदेही प्रदान की।

ग. स्थिरता।

१. जैसा कि पहले बताया गया है, मुख्य सिद्धांत विश्वासयोग्यता है। छोटी-छोटी बातों में विश्वासयोग्यता विकसित करना महत्वपूर्ण है।

२. नए विश्वासी को अच्छी आदतें विकसित करने की आवश्यकता है। उन्हें कुछ क्षेत्रों में स्थिर बने रहने की आवश्यकता है।

   क. उन्हें बाइबल से छोटे-छोटे नियत कार्य दीजिए। उन्हें वह छोटे बाइबल अध्ययन दें जो वह स्वयं कर सकते हैं और आप जानते हैं कि वह उनके लिए एक आशीष होगा।

टिप्पणियाँ -

ख. नए विश्वासी के साथ प्रार्थना करने और उनके साथ बाइबल अध्ययन करने के लिए समय निकालें।

ग. उनकी देखभाल करें और बहुत सा प्रोत्साहन दें।

१) प्रोत्साहन पर जोर दें।

२) उनके लिए सब कुछ न करें। उनके बढ़ने के लिए जगह छोड़ें।

VI. एक पूर्ण शिष्यत्व कार्यक्रम।

लेखक की टिप्पणी #१:

पाठ्यक्रम में आपके पास कितना समय बचा है, इस पर निर्भर करते हुए, शिक्षक १) छात्रों को निम्नलिखित जानकारी दे सकते हैं; २) अतिरिक्त टिप्पणियों और चर्चा के साथ जानकारी प्रस्तुत कर सकते हैं; या ३) टिप्पणियों और चर्चा के साथ जानकारी दे सकते हैं, फिर छात्रों को अन्य छात्रों के साथ भूमिका निभाने की स्थितियों में कुछ गतिविधियों का अभ्यास करने के लिए समय दे सकते हैं।

लेखक की टिप्पणी #२:

छात्रों को एक नए मसीही को शिष्य बनाने के लिए कार्यक्रम का उपयोग करने हेतु चुनौती दी जानी चाहिए। संभवतः छात्र सप्ताह में एक या दो बार नए मसीही विश्वासी से मिल सकते हैं और प्रत्येक बैठक में एक या दो बिन्दुओं को पूरा कर सकते हैं। प्रत्येक बिंदु के साथ, छात्र को उद्देश्य को परिभाषित करना चाहिए और यह मूल्यांकन करने का एक तरीका स्थापित करना चाहिए कि उद्देश्य पूरा हुआ है या नहीं। प्रत्येक बैठक पिछली बैठक में सम्मिलित किए गए बिंदुओं की समीक्षा और उन बिंदुओं पर नए विश्वासी की प्रतिक्रिया के मूल्यांकन के साथ आरम्भ होनी चाहिए।

टिप्पणियाँ -

३० बिंदु कार्यक्रम

(लेरॉय ईम्स द्वारा, अनुमति द्वारा उपयोग किया गया है)[१]

१. उद्धार का आश्वासन।

क. गतिविधियाँ।

१) उनके साथ फिर से सुसमाचार की विषय-सूची की समीक्षा करें।

२) उनसे निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने के लिए कहें: आप कैसे जानते हैं कि आप एक मसीही हैं?

३) तब तक ध्यान दें, जब वह किसी अन्य व्यक्ति को अपने जीवन परिवर्तन के अनुभव का वर्णन करते हैं।

४) उद्धार के आश्वासन पर उनके साथ बाइबल अध्ययन करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) १ यूह. ५:१३ (हम जान सकते हैं कि हम मसीही हैं)।

२) यूह. १:१२, १३ (आश्वासन मसीह के कार्य पर आधारित है)।

३) १ यूह. ५:११, १२ (यह बाइबल के वादे पर आधारित है)।

४) रोमि. ८:१६ (यह पवित्र आत्मा की गवाही पर आधारित है)।

टिप्पणियाँ -

२. शांत समय।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें बताएँ कि आप प्रतिदिन प्रभु के साथ शांत समय क्यों बिताते हैं। उन्हें दिखाएँ कि शांत समय कैसे बिताते हैं।

२) उनके साथ शांत समय बिताएँ।

३) उनके साथ कुछ आशीषों को साझा करें जो आपने प्रभु के साथ अपने शांत समय के दौरान प्राप्त की हैं।

४) मिलकर एक भजन संहिता के माध्यम से प्रार्थना करें।

५) उन्हें प्रभु के साथ समय बिताने की दैनिक आदत विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) मर. १:३५ (यीशु का उदाहरण)।

२) उत्प. १९:२७ (अब्राहम का उदाहरण)।

३) निर्ग. ३४:२,३ (मूसा का उदाहरण)।

४) भज. ५:३ (दाऊद का उदाहरण)।

५) दानि. ६:१० (दानिय्येल का उदाहरण)।

६) १ कुरिं. १:९ (हमें यीशु के साथ संबंध बनाने के लिए कहा गया है)

३. पाप पर विजय।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें अपने जीवन में किए गए पापों पर हाल ही की विजय के विषय में बताएँ। विशिष्ट रहें।

२) उनके साथ १ कुरिं. १०:१३ का अध्ययन करें।

३) उनके साथ भज. ११९:९, ११ को याद कीजिए।

टिप्पणियाँ -

ख. संबंधित पद्य।

१) १ कुरिं. १०:१३ (परमेश्वर वादा करते हैं कि एक रास्ता उपलब्ध है)।

२) १ कुरिं. १५:५७ (यीशु के द्वारा विजय प्राप्त होती है)।

३) यशा. ४१:१३ (परमेश्वर सहायता करने का वादा करते हैं)।

४. पाप से अलगाव।

क. गतिविधियाँ।

१) व्यक्ति के साथ आपके दोनों के जीवन में परीक्षा के क्षेत्रों के विषय में प्रार्थना करें।

२) उन्हें पाप से अलग होने के अपने व्यक्तिगत अनुभव के विषय में बताएँ।

३) उनके साथ २ कुरिं. ६:१४-१६ पढ़ें और प्रार्थना करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) यूह. १:५-२:२ (ज्योति में चलना)।

२) याकू. १:१२ (परीक्षाओं में बने रहना)।

३) २ तीमु: २:१९-२२ (बुराई से दूर रहना)।

४) रोमि. ६:१२-१४ (पाप को हम पर हावी नहीं होना चाहिए)।

५) १ यूह. २:१५,१६ (हमें संसार से प्रेम नहीं करना चाहिए)।

६) रोमि. १२:२ (हमें इस संसार के सदृश्य नहीं होना चाहिए)।

टिप्पणियाँ -

५. मसीही संगती।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें अपने साथ कलीसिया में ले जाओ।

२) उन्हें अन्य मसीहियों के साथ रात के खाने पर आमंत्रित करें।

३) उन्हें एक बाइबल अध्ययन सभा में ले जाएँ। उन्हें समूह में सम्मिलित करें।

४) उन्हें समझाएँ कि आपके लिए संगती लिए इतनी महत्वपूर्ण क्यों है।

ख. संबंधित पद्य।

१) प्रेरितों के काम २:४२ (नए नियम की कलीसिया का उदाहरण)।

२) १ यूह. १:३ (मिलकर संगति)।

३) इब्रा. १०:२४, २५ (हमें संगति नहीं त्यागनी चाहिए)।

४) भज. १२२:१ (हमें आनन्द के साथ कलीसिया में जाना चाहिए)।

५) भज. १३३ (संगती करनी अच्छी है)।

६. बाइबल।

क. गतिविधियाँ।

१) एक अच्छा अनुवाद प्राप्त करने में उनकी सहायता करें। हो सके तो उन्हें एक अध्ययन बाइबल दिलवाएँ।

२) उन्हें दिखाएँ कि शब्दानुक्रमणिका का उपयोग कैसे करना है।

३) उन्हें दिखाएँ कि प्रति सन्दर्भों, बाइबल टिप्पणियाँ और अन्य बाइबल सहायक चीज़ों का उपयोग कैसे करना है, जो उनकी बाइबल में हो सकती हैं।

टिप्पणियाँ -

ख. संबंधित पद्य।

१) २ तीमु. ३:१६, १७ (बाइबल परमेश्वर द्वारा प्रेरित है)।

२) २ पत. १:२१ (बाइबल अस्तित्व में है क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है)।

३) मत्ती २२:२९ (बाइबल को न जानना खतरनाक है)।

४) भज. १९:७-११ (विवरण)।

५) भज. ११९:१०५,१ ६० (बाइबल सत्य, अनन्त और ज्योति है)।

७. वचन सुनना।

क. गतिविधियाँ।

१) एक साथ कलीसिया में जाएँ।

२) उन्हें नोट्स बनाना सिखाएँ। उन्हें समझाएँ कि नोट्स बनाना क्यों आवश्यक है और वह उनका उपयोग कैसे कर सकते हैं।

३) उस उपदेश या शिक्षा के विषय में बात करें जो आपने एक साथ कलीसिया में जाकर सुनी थी। एक दूसरे के साथ साझा करें कि प्रभु ने उपदेश के माध्यम से आप से कैसे बात की।

ख. संबंधित पद्य।

१) नीति. २८:९ (वचन सुनना आपकी प्रार्थनाओं को प्रभावित करता है)।

२) यिर्म. २२:२९ (हमें वचन सुनने के लिए कहा गया है)।

३) लूका १९:४८ (हमें ध्यान से सुनना चाहिए)।

टिप्पणियाँ -

८. वचन पढ़ना।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें समझाएँ कि बाइबल पढ़ते हुए आपको कैसे आशीष मिली है। एक विशिष्ट अनुभव साझा करें।

२) एक साथ बाइबल का एक गद्यांश पढ़ें।

३) उन्हें यूहन्ना की किताब पढ़ना आरम्भ करने के लिए प्रोत्साहित करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) तीमु. ४:१३ (ध्यान से पढ़ें)।

२) प्रका. १:३ (बाइबल पढ़ने की आशीषें)।

३) व्यव. १७:१९ (प्रतिदिन पढ़ने की आवश्यकता)।

९. बाइबल अध्ययन।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें समझाएँ कि आप बाइबल का अध्ययन क्यों करते हैं।

२) उनके साथ बाइबल अध्ययन करें। उन्हें दिखाएँ कि एक-एक अध्याय करके पुस्तक का अध्ययन कैसे किया जाता है। उन्हें दिखाएँ कि एक शब्दानुक्रमणिका या विषय सूचकांक का उपयोग करके विषय अनुसार अध्ययन कैसे करें।

३) बाइबल अध्ययन करते समय उन्हें बाइबल पढ़ने और अध्ययन करने के बीच का अंतर दिखाएँ।

४) उन्हें अपना स्वयं का बाइबल अध्ययन आरम्भ करने हेतु प्रोत्साहित करें और उनकी सहायता करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) प्रेरितों के काम १७:११ (बाइबल अध्ययन करना अच्छा है)।

२) नीति. २:१-५ (बाइबल का अध्ययन करना खजाना खोजने के समान है)।

३) एज्रा ७:१० (एज्रा का उदाहरण)।

१०. पद्य याद करना।

टिप्पणियाँ -

क. गतिविधियाँ।

१) विवरण दें कि पद्य याद करने के अपने स्वयं के अनुशासन में आपको कैसे आशीष मिली है।

२) कुछ पद्यों को एक साथ याद करें।

३) उनके साथ पद्यों की समीक्षा करें।

४) उन्हें पद्यों को याद करने और समीक्षा करने के लिए एक व्यवस्थित योजना विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) कुलु. ३:१६ (याद करना हमारी सहायता कर सकता है)।

२) व्यव. ६:६,७ (मूसा दृढ़ता से इसे प्रोत्साहित करते हैं)।

३) मत्ती ४:४ (यीशु का उदाहरण)।

४) भज. ३७:३१ (यह स्थिरता देता है)।

५) नीति. ७:१-३ (वचन हमारे अंदर होना चाहिए)।

टिप्पणियाँ -

११. वचन पर ध्यान लगाना।

क. गतिविधियाँ।

१) उनके साथ हाल ही में पाई गई आशीष को साझा करें जो आपने अपने ध्यान लगाने के समय में प्राप्त की है।

२) एक साथ गद्यांश का अध्ययन करें। उन्हें अपने मन में घटना और उसके महत्व की कल्पना करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करें। उनसे यह विचार करने और सोचने के लिए कहें कि गद्यांश क्या सिखाता है। उन्हें गद्यांश के विषय में स्वयं से प्रश्न पूछने के लिए कहें (कौन? क्या? क्यों? कहाँ? कब? कैसे?)।

३) पूर्वी रहस्यवाद के ध्यान और मसीही ध्यान लगाने के बीच अंतर स्पष्ट करें।

४) उन्हें प्रतिदिन समय निकाल कर परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाने के लिए प्रोत्साहित करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) भज. १ (ध्यान लगाने के परिणाम)।

२) यहो. १:८ (वादे)।

३) यिर्म. १५:१६ (ध्यान लगाना आनंद लाता है)।

४) फिलि. ४:८ (ध्यान लगाना एक निरंतर मानसिक अनुशासन हो सकता है)।

टिप्पणियाँ -

१२. वचन का अनुप्रयोग।

क. गतिविधियाँ।

१) उनके साथ साझा करें कि आपने हाल ही में अपने जीवन में परमेश्वर के वचन का कैसे अनुप्रयोग किया है। विशिष्ट रहें।

२) उन्हें एक गद्यांश का अध्ययन करने और ऐसे तरीके लिखने के लिए कहें जिससे वह उस गद्यांश का अपने जीवन में अनुप्रयोग कर सकते हैं। उन्हें निम्नलिखित गाइड का उपयोग करने के लिए कहें। उनके साथ प्रक्रिया से होकर जाएँ और अपने स्वयं के अनुप्रयोगों को लिखें।

क) इस गद्यांश का मेरे लिए क्या अर्थ है?

ख) मैं इन क्षेत्रों में स्वयं को कैसे सुधार सकता हूँ?

ग) कुछ विशिष्ट उदाहरण क्या हैं?

घ) मैं क्या करने जा रहा हूँ? विशिष्ट रहें।

३) अपने अनुप्रयोगों पर प्रार्थना करें। परमेश्वर से आपको उन्हें स्मरण दिलाने, उन्हें अपने जीवन में वास्तविक बनाने और आपको उन्हें करने की क्षमता देने के लिए कहें।

ख. संबंधित पद्य।

१) याकू. १:२२-२५ (हमें वही करना चाहिए जो वचन कहता है)।

२) भज. ११९:५६, ६० (ध्यान लगाने से अनुप्रयोग प्राप्त होता है)।

३) २ तीमु. ३:१६, १७ (परमेश्वर का वचन लाभदायक और व्यावहारिक है)।

४) लूका ६:४६-४९ (आज्ञाकारिता एक निश्चित आधार है। हमें वचन को सुनना और करना चाहिए)।

१३. प्रार्थना।

क. गतिविधियाँ।

१) उनके साथ प्रार्थना करें।

२) एक साथ प्रार्थना सूची बनाएँ।

३) उन्हें आपकी किसी एक आवश्यकता के लिए प्रार्थना करने के लिए कहें।

टिप्पणियाँ -

४) उनके साथ हाल ही में प्राप्त प्रार्थना के कुछ उत्तर साझा करें।

५) उन्हें प्रार्थना समूह में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) १ थिस्स. ५:१७ (लक्ष्य निरन्तर प्रार्थना करना है)।

२) मत्ती ६:६ (निजी प्रार्थना)।

३) याकू. ५:१७ (प्रार्थना परिणाम लाती है)।

४) मत्ती २१:२२ (विश्वास के साथ प्रार्थना करें)।

५) १ यूह. ३:२२ (आज्ञाकारिता और उत्तर प्राप्त प्रार्थना एक साथ चलते हैं)।

१४. व्यक्तिगत गवाही।

क. गतिविधियाँ।

१) उनके साथ अपनी गवाही बाँटें।

२) उनकी गवाही सुनें।

३) एक साथ प्रेरितों के काम २६ का अध्ययन करें।

४) उनकी गवाही को सुधारने में उनकी सहायता करें। सुनिश्चित करें कि मसीह उनकी गवाही का केंद्र बिंदु है। सुनिश्चित करें कि वह समझाते हैं:

क) अपने जीवन परिवर्तन से पहले वह कैसे थे।

ख) उनका कैसे परिवर्तित हुआ।

ग) जीवन परिवर्तन के बाद उनका जीवन कैसे बदल गया है।

टिप्पणियाँ -

५) उनके साथ दूसरों को गवाही देने के लिए जाएँ।

क) जब आप किसी व्यक्ति से बात कर रहे हों जिसे आप गवाही सुना रहे हैं, तो उनसे उनकी गवाही के विषय में प्रश्न पूछकर गवाही आरम्भ करने में उनकी सहायता करें।

ख) उन्हें परिवार और मित्रों के लिए प्रार्थना करने और परमेश्वर से उन्हें गवाही देने के अवसर माँगने के लिए प्रोत्साहित करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) लूका ८:३८, ३९ (गवाही एक बदले हुए जीवन का उदाहरण है)।

२) प्रेरितों के काम २६:१-२३ (पौलुस की गवाही)।

३) यूह. ९:२५ (एक अन्य गवाही)।

४) १ यूह. १:३ और मरकुस ८:३८ (यह महत्वपूर्ण है कि आप उसे घोषित करें जो अपने अनुभव किया है)।

१५. मसीह की प्रभुता।

क. गतिविधियाँ।

१) प्रभु के रूप में यीशु के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के विषय में उनसे बात करें।

२) उनके साथ कुलु. १:१८ और इब्रा. १ का अध्ययन करें।

३) उन्हें प्रोत्साहित करें कि वह यीशु को अपने जीवन के उस विशिष्ट क्षेत्र में उनका प्रभु बनने दें जिसमें वह संघर्ष कर रहे हैं।

ख. संबंधित पद्य।

१) लूका ६:४६ (मसीह के प्रति आज्ञाकारिता आवश्यक है)।

२) रोमि. १२:१, २ (एक निश्चित प्रतिबद्धता होनी ही चाहिए है)।

३) कुलु. १:१८ (यीशु को किसी भी चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण होना चाहिए)।

४) इब्रा. १:२ (यीशु सभी चीजों के वारिस हैं)।

टिप्पणियाँ -

१६. विश्वास।

क. गतिविधियाँ।

१) उनके साथ अपने जीवन में विश्वास की सामर्थ के विषय में एक गवाही बाँटें।

२) एक साथ इब्रानियों ११ का अध्ययन करें।

३) विश्वास की अवधारणा के विषय में बात करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) इब्रा. ११:६ (विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है)।

२) इफि. ६:१६ (विश्वास का उपयोग शैतान पर विजय प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है)।

३) १ यूहन्ना ५:४ (विश्वास संसार पर जयवंत होता है)।

४) रोमि. ४:२०,२१ (विश्वास परमेश्वर की महिमा करता है)।

१७. प्रेम।

क. गतिविधियाँ।

१) उनके साथ उस स्थिति का एक व्यक्तिगत उदाहरण साझा करें जब परमेश्वर का प्रेम आप में प्रवाहित हुआ।

२) उन्हें प्रेम दिखाएँ।

३) एक साथ १ कुरिं. १३ का अध्ययन करें।

४) उनके साथ अस्पताल या जेल में लोगों से मिलने जाएँ।

टिप्पणियाँ -

ख. संबंधित पद्य।

१) यूह. १३:३४, ३५ (हमें प्रेम करने की आज्ञा दी गई है)।

२) १ यूह. ३:१७, १८ (प्रेम दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है)।

३) यूह. १५:१३ (प्रेम में बलिदान होता है)।

४) १ कुरिं. १३:४-७ (प्रेम कैसे करें)।

५) १ यूह. ४:७-२१ (हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए)।

१८. जीभ।

क. गतिविधियाँ।

१) इस विषय में बात करें कि जीभ को नियंत्रित करना कितना कठिन है। इस क्षेत्र में उनके साथ अपनी गवाही को बाँटें।

२) एक साथ याकूब ३ का अध्ययन करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) इफि. ४:२९ (हमें उन्नति करने वाले शब्द बोलने चाहिए)।

२) नीति. २६:२० (अफवाह न फैलाएँ)।

३) नीति. १८:६, ७ (हमारा मुँह हमें बर्बाद कर सकता है)।

४) भज. ७१:१५ (हमें इसका उपयोग परमेश्वर की स्तुति करने के लिए करना चाहिए)।

५) याकू. १:२६ (हमें नकारात्मक बात को नियंत्रित करना चाहिए)।

६) याकू. ३:१-१२ (एक अनियंत्रित जीभ के खतरे)।

टिप्पणियाँ -

१९. अपने समय का उपयोग।

क. गतिविधियाँ।

१) व्यक्तिगत, दैनिक कार्यक्रम विकसित करने में उनकी सहायता करें।

२) उन्हें समय बर्बाद न करने की चुनौती दें।

३) उनके साथ इस क्षेत्र के संबंध में प्रार्थना करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) इफि. ५:१५-१७ (समय छुड़ाना)।

२) भज. ९०:१०-१२ (अपने समय की योजना बनाना)।

३) सभो. ३:१ (प्राथमिकताएँ)।

४) याकू. ४:१४ (जीवन छोटा है)।

५) रोमि. १३:११ (समय की तात्कालिकता)।

६) नीति. ३१:२७ (समय बर्बाद न करें)।

२०. परमेश्वर की इच्छा।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें एक ऐसे अनुभव के विषय में बताएँ जो आपके पास परमेश्वर की इच्छा को खोजने के संबंध में आया था। विशिष्ट रहें।

२) उनकी बात सुनें जब वह आपको बताते हैं कि वह बड़े निर्णय कैसे लेते हैं।

३) उन तरीकों पर चर्चा करें जिनसे हम परमेश्वर की इच्छा को पा सकते हैं।

ख. संबंधित पद्य।

१) भज. ११९:१०५ (हम परमेश्वर के वचन के द्वारा दिशा पाते हैं)।

२) नीति. १५:२२ (हम परामर्श प्राप्त कर सकते हैं)।

३) यूह. १६:१३ (पवित्र आत्मा हमारी सहायता कर सकते हैं)।

टिप्पणियाँ -

२१. आज्ञाकारिता।

क. गतिविधियाँ।

१) विषय #१२ की समीक्षा करें। यह देखने के लिए जाँचें कि उन्होंने अपने लिखित अनुप्रयोग पर कैसा किया है।

२) उन्हें अपने लिखित अनुप्रयोगों के परिणामों के विषय में बताएँ।

३) फिर से, उन्हें आज्ञाकारिता का उपयोग करने और परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) यूह. १४:२१ (प्रेम आज्ञाकारिता से साबित होता है)।

२) अय्यूब १७:९ (ताकत आज्ञाकारिता से आती है)।

३) यूह. १५:१०, १४ (आज्ञाकारिता का परिणाम फलदायी होता है और परमेश्वर को प्रसन्न करता है)।

४) १ शमू. १५:२२ (आज्ञाकारिता बलिदान से बेहतर है)।

५) भज. ११९:५९, ६० (परमेश्वर चाहते हैं कि हम तुरंत आज्ञा मानें)।

६) याकू. ४:१७ (अनाज्ञाकारिता पाप है)।

७) यूह. १४:२३ (आज्ञाकारिता के लिए प्रोत्साहन)।

८) यूह. १५:१०, ११ (आज्ञाकारिता से आनन्द मिलता है)।

२२. पवित्र आत्मा।

क. गतिविधियाँ।

१) त्रिएकता की अवधारणा को स्पष्ट करें।

२) उन चीजों की सूची बनाएँ जो पवित्र आत्मा को दुखी करती हैं और उनकी आशीष को रोकती हैं।

३) उनके जीवन में पवित्र आत्मा की अगुवाई होने हेतु उनके लिए प्रार्थना करें।

टिप्पणियाँ -

ख. संबंधित पद्य।

१) यूह. १४:१६ (वह दिलासा देने वाले हैं)।

२) रोमि. ८:२६ (वह प्रार्थना करने में हमारी सहायता करते हैं)।

३) यूह. १६:७, ८ (पवित्र आत्मा की सेवकाई)।

४) रोमि. १२:३-८ और १ कुरिं. १२:४, ८-१० (पवित्र आत्मा के वरदान)।

५) जक. ४:६ और प्रेरितों १:८ (पवित्र आत्मा की सामर्थ)।

६) गला. ५:२२, २३ (पवित्र आत्मा के फल)।

७) इफि. ५:१८ (पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ)।

८) रोमि. ८:५, ६ (शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष)।

९) यूह. १६:१३-१५ (पवित्र आत्मा मसीह की महिमा करते हैं)।

२३. शैतान (अपने शत्रु को जानें)।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें अपनी कुछ व्यक्तिगत लड़ाइयों और विजय के विषय में बताएँ।

२) उन्हें उनकी कुछ सबसे बड़ी परीक्षाओं के विषय में बताने के लिए कहें।

३) उनके साथ शत्रु के आक्रमणों के विरुद्ध प्रार्थना करें।

४) एक साथ मत्ती ४:१-११ का अध्ययन करें। शैतान पर विजय पाने के लिए परमेश्वर के वचन के उपयोग पर जोर दें।

टिप्पणियाँ -

ख. संबंधित पद्य।

१) इफि. ६:१०-१८ (युद्ध के लिए आत्मिक हथियार)।

२) १ यूह. ४:४ (शैतान की शक्ति सीमित है)।

३) यूह. ८:४४ (शैतान झूठा है)।

४) यशा. १४:१२-१५ (शैतान का गिराया जाना)।

५) २ कुरिं. २:११ (हम शत्रु को जान सकते हैं)।

६) १ यूह. ३:८ (शैतान के काम नष्ट किए गए हैं)।

२४. पाप से निपटना।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें अपनी कुछ समस्याओं और विजय के विषय में बताएँ।

२) उनके साथ उनके जीवन में परीक्षा के क्षेत्रों के विषय में प्रार्थना करें।

३) उन्हें पाप में बने रहने के खतरे के विषय में चेतावनी दें।

ख. संबंधित पद्य।

१) कुलु. ३:९, १० (एक नया जीवन जिएं)।

२) १ पत. १:१४-१६ (हमें पवित्र होना चाहिए)।

३) रोमि. १३:१४ (परमेश्वर पर भरोसा रखें)।

४) मर. १४:३८ (देखें और प्रार्थना करें)।

५) १ यूह. १:९ (अंगीकार)।

टिप्पणियाँ -

२५. क्षमा का आश्वासन।

क. गतिविधियाँ।

१) उनके साथ अपनी स्वयं की गवाही बाँटें कि कैसे परमेश्वर ने आपको पाप के लिए क्षमा किया। विशिष्ट रहें।

२) उनसे कहें कि वह आपको बताएँ कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे क्षमा किया।

३) उन्हें किसी दूसरे को क्षमा करने की चुनौती दें। संभवतः उन्हें किसी के साथ शांति बनाने की आवश्यकता हो।

ख. संबंधित पद्य।

१) मत्ती ५:२३, २४ और मत १८:१५ (दूसरों को क्षमा करना आवश्यक है)।

२) १ यूह. १:९ (अंगीकार की आवश्यकता)।

३) भज. ३२:१ (क्षमा की आशीष)।

२६. मसीह का दूसरा आगमन।

क. गतिविधियाँ।

१) उनसे पूछें कि वह आज कैसे जियेंगे यदि वह जानते हों कि यह वह दिन है जब मसीह वापस आएँगे।

२) इस विषय में बात करें कि कैसे मसीह का दूसरा आगमन आपको प्रेरित करता है।

ख. संबंधित पद्य।

१) १ थिस्स. ४:१६, १७ (यह एक वादा है)।

२) यूह. १४:२, ३ (वह हमें ग्रहण करेंगे)।

३) १ यूह. ३:२, ३ (यह हमारे जीवन के लिए एक चुनौती है)।

४) तीतु. २:११-१४ (हमें धर्मी जीवन जीना चाहिए)।

५) प्रका. १९:११-१६ (वह महिमा में आयेंगे)।

टिप्पणियाँ -

२७. गवाही देना।

क. गतिविधियाँ।

१) एक साथ गवाही देने के अवसरों के लिए प्रार्थना करें।

२) न बचे हुए मित्रों और रिश्तेदारों की प्रार्थना सूची बनाएँ। उनके लिए प्रार्थना करें। उन्हें उनको गवाही देने के लिए चुनौती दें।

३) सुसमाचार प्रचार पर एक बाइबल अध्ययन करें।

ख. संबंधित पद्य।

१) कुलु. १:२८, २९ (मसीह की स्वाभाविक तरीके से घोषणा करें)।

२) रोमि. १:१६ (सुसमाचार से लज्जित न हों)।

३) २ तीमु. ४:१, २ (स्थिर और उत्सुक रहें)।

४) नीति. ११:३० (बुद्धिमान व्यक्ति आत्माओं को जीतते हैं)।

५) प्रेरितों के काम ८:३५ (गवाही देते समय बाइबल का प्रयोग करें)।

६) नीति. २८:१ (साहस आवश्यक है)।

७) प्रेरितों के काम ४:३१ (पवित्र आत्मा आपको निडरता देंगे)।

८) लूका १९:१० (हमें गवाही देने के लिए लोगों की तलाश करनी चाहिए)।

२८. आगे की कार्रवाई।

क. गतिविधियाँ।

१) आगे की कार्रवाई के विषय में बात करें।

२) जब आप किसी के साथ आगे की कार्रवाई करते हैं तो उन्हें अपने साथ जाने दें।

३) किसी के साथ आगे की कार्रवाई करने की उनकी योजनाओं के विषय में उनके साथ प्रार्थना करें।

टिप्पणियाँ -

ख. संबंधित पद्य।

१) कुलु. १:२८ (हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें)।

२) ३ यूह. ४ (किसी को परमेश्वर के साथ चलते हुए देखकर आनन्द आता है)।

३) २ तीमु. २:२ (गुणा करने की सेवकाई)।

४) २ तीमु. १:३ (आगे की कार्रवाई में प्रार्थना)।

२९. देना।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें अपने पैसे का बेहतर भण्डारी बनने के लिए चुनौती दें। बजट बनाने में उनकी सहायता करें।

२) उन्हें देने की योजना बनाने के लिए चुनौती दें।

ख. संबंधित पद्य।

१) नीति. ३:९, १० (परमेश्वर को दें)।

२) २ कुरिं. ९:६-८ (आनन्द से दें)।

३) लूका ६:३८ (देने की आशीष)।

४) नीति. ३:२७ (जब भी हो सके तो दें)।

५) नीति. ११:२४, २५ (उदार व्यक्ति आशीषित है)।

३०. विश्व दर्शन।

क. गतिविधियाँ।

१) उन्हें एक नियुक्त-सेवा कार्यकर्त्ता से मिलवाएँ।

२) एक साथ नियुक्त-सेवा कार्यकर्ताओं के लिए प्रार्थना करें। विशिष्ट देशों के लिए प्रार्थना करें।

३) उन्हें नियुक्त-सेवा में आर्थिक रूप से देने के लिए प्रोत्साहित करें।

टिप्पणियाँ -

ख. संबंधित पद्य।

१) मत्ती ९:३५-३८ (मजदूरों के लिए प्रार्थना)।

२) मत्ती २८:१९, २० (महान आज्ञा)।

३) प्रेरितों के काम १:८ (पवित्र आत्मा हमें सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक पहुँचाने की सामर्थ देते हैं)।

४) मर. १६:१५ (सभी लोगों को सुसमाचार का प्रचार करें)।

५) यशायाह ६:८ (यदि परमेश्वर हमें बुलाएँ तो हमें जाने के लिए तैयार रहना चाहिए)।

लेखक की टिप्पणी:

प्रत्येक नया विश्वासी अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को खोजने में रुचि रखता है। इस पाठ्यक्रम के लिए अंतिम विचार के रूप में, परमेश्वर की इच्छा को कैसे जानें या निर्देश कैसे प्राप्त करें की रूपरेखा सम्मिलित है।

परमेश्वर की इच्छा जानने (दिशा प्राप्त करने) की आठ कुंजियाँ:[3]

१) विश्वास करें कि परमेश्वर आपका मार्गदर्शन करेंगे (यिर्म. २९:११; नीति. ३:५,६; यशा. ५५:८,९)।

२) आपके लिए उनकी इच्छा के सामने समर्पण करें (यूह. ७:१७; १२:२४-२६)।

३) परमेश्वर की इच्छा का प्रतिदिन अभ्यास करें (मत्ती २५:२९)।

४) दो या दो से अधिक गवाहों की खोज करें (मत्ती १८:२०; २५:२९)।

५) बाईबल को जानें (यूह. ८:३१,३२)।

६) परमेश्वर की शांति को अपना अधिनिर्णायक बनने दें (१ कुरिं. ३:१५)।

७) नम्रता का उपयोग करें (नीति. १५:३३; याकू. ४:६)।

८) पाप से छुटकारा पाएँ - यह अंधा करता है (रोमि. १:२४-३२)।

टिप्पणियाँ -

व्यावहारिक शिष्यत्व: अंतटिप्पणियाँ

[१] लेरॉय ईम्स, द लॉस्ट आर्ट ऑफ़ डिसिप्लिन मेकिंग (ग्रैंड रैपिड्स, एमआई: ज़ोंडरवन पब्लिशिंग हाउस, १९७८), परिशिष्ट १। पाठ्यक्रम का यह खंड ईम्स के लेखन का प्रत्यक्ष अनुकूलन है। लेरॉय एम्स की किताब द लॉस्ट आर्ट ऑफ डिसिप्लिन मेकिंग से लिया गया है। लेरॉय ईम्स द्वारा कॉपीराइट १९७८। ज़ोंडरवेन पब्लिशिंग हाउस की अनुमति के साथ प्रयोग किया गया है।

[२] क्लास नोट्स, "क्रिश्चियन लीडरशिप" पाठ्यक्रम, डॉ जो उमिदी रीजेंट यूनिवर्सिटी, १९८८ द्वारा। अनुमति के साथ प्रयोग किया गया है।

[३] पैट रॉबर्टसन, द प्लान (नैशविल, टीएन: थॉमस नेल्सन, इंक. १९८९) पृष्ठ ३९।